विकास की यात्रा में भागीदार

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा 2 मार्च 2006 को नई दिल्ली के ताज पैलेस होटल में स्वागत भाषण

राष्ट्रपति जार्ज बुश, मैडम फर्स्ट लेडी, देवियों और सज्जनों। आपका और आपके प्रतिनिधि मंडल का स्वागत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। आपको अपने बीच पाकर हम खुश हैं। व्हाइट हाउस में आपके द्वारा की गई शानदार मेहमानवाजी का जवाब देने का यह अवसर हमारा सौभाग्य है।

भारत के लोग अमेरिका के लोगों के प्रति बहुत सम्मान और स्नेह रखते हैं। ऐसा वे सदियों से रखते आए हैं। हमारे संबंध दो-तरफा रहे हैं। बहुत सालों पहले, हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विदेशी शासन के खिलाफ नागरिक-नाफरमानी आंदोलन चलाते वक्त हेनरी डेविड थोरू के असर को स्वीकार किया था।

हमारी अपनी पीढ़ी में अमेरिका के एक महान पुत्र मार्टिन लूथर किंग ने जन-स्वतंत्रता और नस्लीय बराबरी के लिए अहिंसक संघर्ष छेड़ते समय महात्मा गांधी के प्रभाव को स्वीकार किया था।

राष्ट्रपति महोदय, करीब आधी शताब्दी पहले राष्ट्रपति आइजनहॉवर ने भारत यात्रा के दौरान कहा था, ''हमें, जो स्वतंत्र हैं और जो ईश्वर और प्रकृति द्वारा दिए गए तमाम उपहारों में से सबसे ज्यादा कद्र अपनी स्वतंत्रता की करते हैं, एक-दूसरे को और बेहतर तरीके से जानना चाहिए, एक दूसरे के प्रति ज्यादा भरोसा जताना चाहिए और एक दूसरे का समर्थन करना चाहिए।''

राष्ट्रपति महोदय, आज इन शब्दों से एक नई गूंज पैदा हो रही है। लोकतंत्र और शांतिपूर्ण राजनीतिक जनचेतना को आपके और हमारे लोगों ने सामाजिक परिवर्तन के सभ्य औजार के तौर पर सम्मान दिया है। लोकतंत्र और मानवाधिकारों के प्रति हमारी उत्कट प्रतिबद्धता, कानून के सामने सबकी बराबरी के प्रति हमारे सम्मान और अपने धार्मिक विश्वास और बोलने की स्वतंत्रता के प्रति हमारे सम्मान ने हमको एक ही राह का राही बनाया है।

आज भारत में हम विकास के पथ पर आगे चलने के हिमालयी अभियान में जुटे हैं, जीवन की गुणवत्ता सुधारने के अभियान में जुटे हैं और विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक को आधुनिकीकृत बनाने में जुटे हैं। हम अपने यहां ऐसा सामाजिक और आर्थिक माहौल देने की कोशिश में हैं जो हर भारतीय की रचनात्मकता और उद्यमशीलता को नए पंख लगाए और हमारे लोगों को गौरव, परिपूर्णता और आत्म-सम्मान के साथ जीवन जीने के काबिल बनाए।

अमेरिका प्रगति की इस यात्रा में एक भागीदार रहा है। मैं इसलिए बहुत खुश हूं कि इस यात्रा में आप कृषि के क्षेत्र में हमारे दोनों देशों के पुराने सहयोग को नवीनीकृत करेंगे। पहले भी, हमारे किसानों को अमेरिकी मदद से बहुत लाभ हुआ है और ऐसा फिर होगा, उस ज्ञान अभियान के जरिये जिसकी शुरुआत आप करेंगे।

राष्ट्रपति महोदय, भारत में हम अमेरिकी लोगों की रचनात्मकता और उद्यमशीलता की, आपके शानदार संस्थानों की, आपकी अर्थव्यवस्था के खुलेपन की और विविधता को तत्परता से गले लगाने की सराहना करते हैं। इन्होंने श्रेष्ठतम भारतीय मस्तिष्कों को आकर्षित किया है और ऐसी समझ और जुड़ाव का सृजन किया है, जो हमारे बीच की दूरियों और मतभेदों से ऊपर है।

कल आप उन भारतीय नौजवानों से मिलेंगे जो हमारी ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के इंजिनों में ईंधन भर रहे हैं। पूरे विश्व के सामने हमारे लोगों की प्रतिभा और योग्यता के ज्यादा दृष्टव्य प्रस्तुतीकरण को आपके देश ने ही संभव बनाया।

राष्ट्रपति महोदय, हमें तलाश है ऐसे विश्व की जो गरीबी, अज्ञानता, बीमारी और आतंक की धमकी से मुक्त हो। अमेरिका और भारत को सारे संभव मंचों पर इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एकसाथ मिलकर काम करना चाहिए। आतंकवाद जहां भी मौजूद हो, हमें उसका मुकाबला करना चाहिए, क्योंकि कहीं का भी आतंकवाद हर जगह के लोकतंत्र के लिए धमकी है।

भारत अपने पड़ोस में शांति और संपन्नता चाहता है। हमारा उपमहाद्वीप विश्व के सभी महान धर्मों का घर रहा है। यह मानवीय रचनात्मकता का शक्तिगृह है, जहां ज्ञान को हमारे सृजनकर्ता के उपहार के तौर पर पूजा जाता है। अक्लमंदी और दूरदर्शिता के साथ, हम दक्षिण एशियाई सिर्फ इस क्षेत्र को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं।

आधुनिकीकरण और विकास, सामाजिक परिवर्तन और सशक्तीकरण की हमारी यात्रा में, हम अमेरिका को एक साझेदार, एक मित्र और एक शुभ-चिंतक के रुप में देखते हैं। विशेष तौर पर, राष्ट्रपति महोदय, आपको हम हमारे देश के एक सच्चे दोस्त के रुप में देखते हैं।

भारत और भारतीय लोगों की आपके द्वारा की गई गर्मजोशी से तारीफ ने मुझे हमेशा छुआ है। हमारे देशों के बीच और करीबी आर्थिक और रणनीतिक साझीदारी के प्रति आपकी गहरी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता को हम ईमानदारी से स्वीकार करते हैं। हां, मैं याद करता हूं कि पहली मुलाकात में, आपने हमारे उन प्रयासों के प्रति सम्मान व्यक्त किया था जो हम आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए खुले समाज और खुली अर्थव्यवस्था के दायरे में रहकर कर रहे हैं।

बहुलतावाद और आधुनिकीकरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और भारतीय लोकतंत्र के प्रति आपके सम्मान ने मुझे गहरे छुआ है। हम भारत में आपके उस मजबूत पक्ष का बहुत सम्मान करते हैं जो आपने अपने देश में संरक्षणवादी ताकतों के उभार के खिलाफ लिया था। हम भारत में आपके उस दूरदर्शी दृष्टिकोण का बहुत सम्मान करते हैं, जो आपने आउटसोर्सिंग के मसले पर अपनाया। यह रुख अपनाकर आपने दोनों देशों के बीच रिश्तों को मजबूत ही नहीं किया, बल्कि विश्व बाजार में अमेरिका की बढ़त को भी बनाए रखा।

2 मार्च को हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की बात को ध्यान से सुनते राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश।

मैडम फर्स्ट लेडी, मेरी पत्नी और मैं कृतज्ञता के साथ आपके घर में आपकी गर्मजोशी से मेहमानवाजी को याद करते हैं। सीखने और शिक्षा में आपकी गहरी और लगातार दिलचस्पी है। मुझे आशा है, जैसा कि मैंने आपसे कुछ क्षण पहले कहा है, आप हमारे छात्रों और अध्यापकों के साथ कुछ समय बिताने के लिए भारत लौटेंगी और उनके बीच एक नए भारत की तलाश करेंगी।

मैं इस बात से वाकई बहुत दुखी हूं कि राष्ट्रपति इस बार आपको ताजमहल नहीं ले जा रहे हैं। मुझे आशा है कि आप जब अगली बार यहां होंगी, तो वह ज्यादा हिम्मत दिखाएंगे।

देवियों और सज्जनों, क्या मैं आपसे निवेदन कर सकता हूं कि आप अमेरिका के राष्ट्रपति और फर्स्ट लेडी की चिरकालिक अच्छी सेहत और खुशी और हमारे महान देशों की अनंत मित्रता को समर्पित जाम में मेरे साथ शरीक हों। □